International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 06, June 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्वतंत्रता संग्राम में बालगंगाधर तिलक जी का योगदान

निर्मला

सहायक प्रोफेसर (इतिहास)

वैश्य कन्या महाविद्यालय, समालखा

सार

बाल गंगाधर तिलक जी का स्वतंत्रता आन्दोलन में अतुलनीय योगदान है| लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी ने अपने अथक प्रयासों से भारतीयों में राजनीतिक चेतना लाने का प्रयास किया| तिलक जी भारतीय राष्ट्रवाद के महान समर्थक थे| वे सामाजिक कुप्रथाओं को भी समाप्त करना चाहते थे| बाल गंगाधर जी ने कांग्रेस को आजादी के संघर्ष के लिए नई तकनीक से तैयार किया| उन्होंने अंग्रेजों केविरुद्धस्वतंत्रता आन्दोलन को जन आन्दोलन बनाया| उन्होंने स्वदेशी और बहिष्कार को जनता तक पहुंचाया| उन्होंने केसरी और मराठा नामक समाचार पत्रों का प्रकाशन करके देश के युवाओं में आत्मसम्मान, आत्मविश्वासव बलिदान की भावनाएं जागृत की| शिवाजी और गणपति उत्सव आरम्भ करके देशभक्ति की भावना का प्रसार किया| स्वराज्य को कांग्रेस का लक्ष्य घोषित करकेस्वतंत्रता आन्दोलन में नया जोश भरा|

मुख्यशब्दः

स्वतंत्रता संग्राम, अंग्रेज, स्वराज्य, राष्ट्रीय कांग्रेस

भूमिका

स्वतंत्रता संग्राम के महान सेनानियों में लोग मान्य बाल गंगाधर तिलक जी को उनके साहस, बलिदान औरनिस्वार्थ भावना के लिए जाना जाता है। वे अंग्रेजी भाषा के विरुद्ध थे।उनका मानना था कि अंग्रेजी भाषा भारतीय लोगों के लिए हानिकारक है। तिलक जी ने

कुछ समय तक स्कूलकॉलेज में गणित भी पढ़ाया। तिलक जी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कुछ नेताओं के साथ संधि की।इनमें से प्रमुख नेता लाला लाजपत राय बिपिन चंद्र पाल और अरविन्द घोष थे।तिलक जी का मानना था कि सबसे पहले देश को अंग्रेजों से आजाद कराना चाहिए और उसके बाद सभी भारतीयों को शिक्षित करना चाहिए।इसी प्रकार ही देश को आर्थिक तथा सामाजिक रूप से सुदृढ किया जा सकता है।

तिलकजी का मानना था कि शिक्षा के द्वारा ही भारत से अनेक सामाजिक कुरीतियों जैसे बाल विवाह, दहेज प्रथा, सती प्रथा इत्यादि को समाप्त किया जा सकता है| इसी कारण ही वे किसी घोषणा पत्र के पक्ष में नहीं थे। तिलक जी और उनके समय के कुछ नेताओं के बीच मौलिक मतभेद थे। उस समयके कुछ नेताओं का भारतीय सभ्यता और संस्कृति पर विश्वास नहीं रहा था और वे पश्चिमी सभ्यता को हमारी सभ्यता से श्रेष्ठ मानते थे। तिलक जी चाहते थे कि भारतीय लोगों में पश्चिमी संस्कृति के प्रति अलगाव पैदा हो और लोग भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता को अनुभव करें।

उस समय कुछ लोग पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में आकर ब्रिटिश साम्राज्य की सहायता कर रहे थे।यह सब देखकर तिलक जी को बहुत दुख हुआ ओर उन्होंने भारतीय लोगों को भारतीय संस्कृति के महत्व के बारे मे समझाया। उन्होंने लोगों को ये बताया की शिवाजी और औरंगजेब का जो युद्ध था वह दरअसल एक भारतीय का विदेशी साम्राज्य से युद्ध था। तिलक जी ने ही शिवाजी उत्सव मनाने की प्रथा को आरंभ किया। शायद इस लिए ही कुछ अंग्रेजी लेखकों ने तिलक जीको मुस्लिम विरोधी कहा जब की सच्चाई यह थी कि गंगाधर जी साम्प्रदायिक नहीं थे। तिलक जी का मुख्य उद्देश्य महाराष्ट्र के लोगो में शिवाजी के महत्व की ज्वाला को जलाकर उन सब को देश भक्ति के लिए प्रेरित करना था। इसी प्रकार तिलक जी ने गणेश उत्सव का आरंभ किया। गणेश उत्सव के समय तिलक जी ने अपने भाषणों द्वारा लोगों को राजनीतिक शिक्षा प्रदान की। तिलक जी के मतभेद महाराष्ट्र के कुछ समाज सुधारको से भी थे। उन समाज सुधारकों का ये हैं मानना नहीं था कि हमारी सामाजिक

रूढ़िवादिता के कारण ही हमें राजनीतिक गुलामी प्राप्त हुई।इस बात को समझाने के लिए तिलक जी ने लोगों को श्रीलंका और बर्मा का उदाहरण दिया की कैसे उन देशो में सामाजिक स्वतंत्रता होते हुए भी वे राजनीतिक गुलाम थे।

स्वतंत्रता संग्राम में बालगंगाधर तिलक जी का योगदान

तिलक जी ये हैं नहीं चाहते थे कि किसी बाहरी माध्यम की सहायता से समाज में सुधार किया जाए। वह ये है भी नहीं चाहते थे कि सरकारी अधिनियमों के द्वारा समाज सुधार किया जाए। उनके इन्हीं विचारों की कारण ही अंग्रेज लेखक तिलक जी को रूढिवादी मानते थे। परन्तु उनके इन आरोप का कोई भी आधार नहीं था क्योंकि लोकमान्य जी ने कई अधिवेशनों में बाल विवाह को रोकने का प्रस्ताव रखा। तिलक जी का ये है मानना था कि मनुष्य को समाज को बदलने से पहले खुद को बदलना चाहिए। खुद में सुधार लाए बिना कोई भी व्यक्ति समाज में सुधार नहीं कर सकता। तिलक जी यह नहीं चाहते थे की किसी विदेशी सत्ता द्वारा भारतीय समाज में सुधार किया जाए। उनका मानना था कि ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा अधिनियम बनाकर समाज सुधार नहीं किया जा सकता था। तिलक जी ने दो समाचार पत्र भी शुरू किये; जिनके नाम मराठा और केसरी थे। उनके ये दोनों समाचार पत्र जनता की बीच बहुत ही प्रचलित हुए। तिलक जी ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा किये जाने वाली क्रूरता का बहुत ही विरोध किया। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य से ये है मांग की कि वे भारत को पूर्ण स्वराज प्रदान करें। उन्होंने अपने समाचार पत्र केसरी में कई बार अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध लिखा जिसके कारण उन्हें जेल में भी कई दिन बिताने पड़े। तिलक जी ने आर्थिक क्षेत्र में स्वदेशी का अर्थ देशी उद्योगों की स्थापना करना स्वीकार किया| रचनात्मक स्वदेशी में राष्ट्रीय विद्यालयों और ग्राम सुधार को शामिल किया| स्वदेशी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ विदेशी माल के बाहिष्कार को भी राजनीतिक हथियार की तरह इस्तेमाल किया| विदेशी वस्त्रों की होली जलाकर भी बहिष्कार को जनता में प्रसिद्ध किया

गया| तिलक जी कुछ समय पश्चात राष्ट्रीय कांग्रेस में भी शामिल हुए परन्तु पार्टी की नरमपंथी विचारधारा को देख कर वे कांग्रेस के खिलाफ़ होगए।1907 में कांग्रेस दो दलों में विभाजित हो गई। इनमें से एक दल का नाम था गरम दल तथा दूसरा था नरम दल। तिलक जी गरमदल में शामिल हुए और उनकी वहाँ पर विपिन चन्द्र पाल तथा लाला लाजपत राय जी से मुलाकात हुई। बाद में ही इन तीनों को लाल-बाल-पाल कहा जाने लगा। 1908 में तिलक जी ने क्रांतिकारी खुदीराम बोस के बम हमले का समर्थन किया, जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें मांडले की जेल में भेज दिया गया। जेल से निकलने के बाद उन्होंने फिर से कांग्रेस में वापसी की। सन 1890 में तिलक जी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़ें। उस समय कांग्रेस की विचारधारा पूर्ण स्वराज के खिलाफ़ थी। इसी कारण तिलक जी कांग्रेस के खिलाफ़ भी थे।1914 में जब प्रथम विश्व युद्ध शुरू हुआ तब तिलक जी ने ब्रिटिश साम्राज्य से सहायता करने के लिए कहा। 1914-15 में श्रीमती एनीबेसेंट ने कांग्रेस के गरम दल और नरम दल के बीच समझौता करवाया।

1916 में तिलक जी ने होमरूल लीग आंदोलन चलाया जिसमें उनकी सहायता श्रीमती एनीबेसेंट ने की।होम रूल का मतलब ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त करना नहीं था बल्कि इसका मतलब यह था की ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन आजादी प्राप्त करना।

तिलक जी का यह मानना था कि अहिंसा के रास्ते ब्रिटिश साम्राज्य से आजादी प्राप्त करना नामुमकिन था इसलिए वह भारत के लोगों को स्वराज के प्रति थोड़ा हिंसक रहने के लिए प्रेरित करते थे।1914 मेंगरम दल ने लिबरल फेडेरेशन की स्थापना की। इस प्रकार तिलक जी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को अंग्रेजी साम्राज्य का दुश्मन बना दिया था।यह मानना था कि सामान्य लिपि राष्ट्रीय आंदोलन का अंग है।

तिलक जी कहा करते थे कि पूरे भारत में सिर्फ एक ही भाषा होनी चाहिए। एक भाषा के माध्यम से ही पूरे देश में एकता का विस्तार किया जा सकता है।तिलकजी हमेशा अपने

भाषणों में अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ़ ही बोलते थे। इसलिए अंग्रेज उन्हें भारत की अशांति का प्रतीक मानते थे। 1897 में महाराष्ट्र में प्लेग की बीमारी फैल गई। इस बीमारी की रोकथाम के लिए अंग्रेजी साम्राज्य ने बहुत ही धीमा कार्य किया। इसी बात से नाराज होकर किसी ने पुणे की प्लेग कमीश्नर की हत्या कर दी। उस उस समय अंग्रेजों ने तिलक जी पर हिंसा भड़काने का आरोप लगाकर उन्हें 18 महीनों के लिए कारावास में डाल दिया। उनकी सजा को लेकर भारत में हर तरफ विरोध जताया गया और अब तिलक जी पूरे भारत में प्रभावशाली नेता बन गए थे।

तिलक जी ने जेल से बाहर आकर अपने समाचार पत्र केसरी में अंग्रेजों के खिलाफ़ देश का दुर्भाग्य नाम से एक अंकित लेख लिखा। इस लेखन के विरोध में अंग्रेजों ने तिलक जी को गिरफ्तार कर लिया। अंग्रेजों ने तिलक जी पर राज द्रोह का मुकदमा चलाया। उन्हें 6 साल के लिए बर्मा जेल में रहने की कठोर सजा सुनाई गई। वहीं जेल में तिलक जी ने अंग्रेजों से कुछ पुस्तकों की मांग की परन्तु अंग्रेजों ने उन्हें कोई राजनीतिक पत्र लिखने के लिए मना कर दिया। वहीं जेल में रहते हुए ही तिलक जी को अपनी पत्नी के स्वर्गवास की खबर मिली जिसको सुनकर वे बहुत ही दुखी हो गए।

नेहरू ने 28 जुलाई, 1956 को संसद में लोकमान्य तिलक के चित्र का अनावरण करते हुए, तिलक को अपनी शानदार श्रद्धांजलि का समापन किया। उन्होंने कहा कि तिलक के निकट संपर्क में आना मेरा सौभाग्य था। जब वह अपने करियर की ऊंचाई पर थे, मैं दूर देश में था, तब (भी) एक छात्र था। लेकिन वहां भी उनकी आवाज और उनकी कहानी हम तक पहुंची और हमारी कल्पना को हवा दी। हम जल्दी ही उस प्रभाव में पले-बढ़े और इसके द्वारा ढाले गए। एक मायने में, उस समय के युवाओं के लिए भारत वही था जो तिलक ने प्रस्तुत किया था, जो उन्होंने कहा था और जो उन्होंने लिखा था, और सबसे बढ़कर, उन्होंने जो झेला था।

यही वह विरासत थी जिसके साथ गांधीजी को अपने विशाल आंदोलनों की शुरुआत करनी पड़ी थी। यदि लोकमान्य द्वारा भारतीय लोगों और भारत की कल्पना और भारत के युवाओं को ढाला नहीं गया होता, तो अगला कदम उठाना आसान नहीं होता। इस प्रकार, इस ऐतिहासिक चित्रमाला में, हम एक के बाद एक महान व्यक्ति को भाग्य और इतिहास के ऐसे कार्य करते हुए देख सकते हैं, जो भारत की स्वतंत्रता की उपलब्धि का कारण बने हैं। हम यहां न केवल भारत की क्रांति के जनक, इस महान व्यक्ति की तस्वीर का अनावरण करने के लिए मिलते हैं, बल्कि उन्हें याद करने और उनसे प्रेरित होने के लिए भी मिलते हैं। तिलक अपनी पीढ़ी के उन नेताओं में सबसे बड़े थे जिन्होंने गांधीवादी युग के परीक्षणों और विजयों के लिए राष्ट्र को तैयार किया। गांधीजी द्वारा असहयोग आंदोलन शुरू करने के एक दिन पहले 1 अगस्त 1920 को, तिलक का निधन हो गया, इस प्रकार एक के अंत और दूसरे युग की शुरुआत हुई, जो उनके स्वतंत्र भारत के सपने को साकार करने में परिणत हुआ।

निष्कर्ष

बाल गंगाधर तिलकका नाम उन चुनिंदा लोगों में लिया जाता हैं जिन्होंने जिनके विचारों और कार्यों में भारत के विकास में अहम भूमिका निभाई। तिलक बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे और भारत के स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा देने में उनकी अग्र*णी* भूमिका थी। महात्मा गांधीके पूर्व भारत में लोगों को एक जुट करने और पराधीनता के विरोध में लोगों को जागरूक करने की डोर बाल गंगाधर तिलक ने ही संभाली हुई थी।

संदर्भसूची

1. सुमित सरकार, आधुनिक भारत
2. आर.सी. मजूमदार, हिस्ट्री ऑफ़ फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया
3. शेखर वंद्योपाध्याय, आधुनिक भारत का इतिहास
4. विपिनचंद्र, आधुनिक भारत का इतिहास
5. एन.सी. केलकर, ट्रायल ऑफ़ तिलक
6. विपिनचंद्र, एम. मुख़र्जी, इंडियाज स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस
7. बी. एल. ग्रोवर, आधुनिक भारत का इतिहास